राजभाषा मासिक ई–पत्रिका

अगस्त 2024 संस्करण

दामोदर घाटी निगम

साम्राज्य से स्वराज्य तक

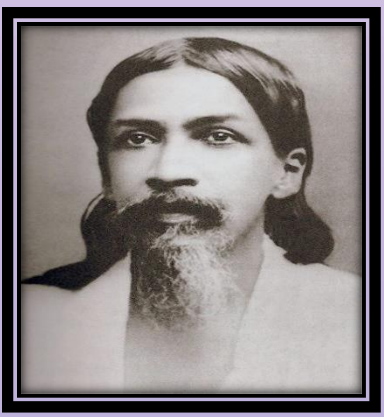

श्री अरबिंदो

अरबिंद कृष्णधन घोष एक महान योगी और गुरु होने के साथ-साथ एक दार्शनिक भी थे। इनका जन्म 15 अगस्त 1872 को कोलकाता पश्चिम बंगाल में हुआ था। इनके पता कृष्णधन घोष एक डॉक्टर थे। युवा-अवस्था में ही इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारियों के साथ देश की आजादी में हिस्सा लया ।

वेद, उपनिषद तथा ग्रंथों का पूर्ण ज्ञान होने के कारण इन्होंने योग साधना पर मौ लक ग्रंथ लखें। श्री अरबिंदो के पता डॉ कृष्णधन घोष चाहते थे क वे उच्च शक्षा ग्रहण कर उच्च सरकारी पद प्राप्त करें। इसी कारणवस उन्होंने सर्फ 7 वर्ष के उम्र में ही श्री अरबिंदो को पढ़ने इंग्लैंड भेज दिया। 18 वर्ष के होते ही श्री अरबिंदो ने आईसीएस की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। 18 साल की आयु में इन्हें कैंब्रिज में प्रवेश मल गया। अर वंद घोष न केवल आध्यात्मिक प्रकृति के धनी थे बल्कि उनकी उच्च साहित्यिक क्षमता उनके माँ की शैली की थी। इसके साथ ही साथ उन्हें अंग्रेज़ी, फ्रेंच, ग्रीक, जर्मन और इटा लयन जैसे कई भाषाओं में निपुणता थी।

सन् 1910 में श्री अरबिंदो कलकत्ता छोड़कर पां डचेरी बस गए। वहाँ उन्होंने एक संस्थान बनाई और एक आश्रम का निर्माण कया। सन् 1914 में श्री अरबिंदो ने आर्य नामक दार्शनिक मा सक पत्रिका का प्रकाशन कया। अगले 6 सालों में उन्होंने कई महत्वपूर्ण रचनाएँ की। कई शास्त्रों और वेदों का ज्ञान उन्होंने जेल में ही प्रारंभ कर दी थी। सन् 1926 में श्री अरबिंदो सार्वजनिक जीवन में लीन हो गए।

1906 में बंगाल वभाजन के बाद श्री अरबिंदो ने इस्तीफा दे दिया और देश की आज़ादी के लए आंदोलनों में स क्रय होने लगे। स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख भू मका निभाने के साथ साथ उन्होनें अंग्रेज़ी दैनिक 'वंदे मातरम' पत्रिका का प्रकाशन कया और निर्भय होकर लेख लखें।

श्री अरबिंदो की प्रमुख रचनाएँ

•श्री अरबिंदो की रचनाओं में गीता का वर्णन, वेदों का रहस्य व उपनिषद का सम्पूर्ण व्याख्यान है।
•द रेनेसां इन इं डया
•वार एंड सेल्फ डटर मनेसन
•द ह्यूमन साइ कल
•द आइ डयल ऑफ़ ह्यूमन यूनिटी
•द फ्यूचर पोएट्री

इस माह के चयनित साहित्यकार

भरतभूषण अग्रवाल

तार सप्तक' के क व भारतभूषण अग्रवाल का जन्म 3 अगस्त, 1919 को तुलसी-जयंती के दिन उत्तर प्रदेश के मथुरा ज़िले के सतघड़ा मोहल्ले में हुआ। उन्होंने आर भक शक्षा मथुरा और चंदौसी में पाई, फर उच्च शक्षा आगरा और दिल्ली में पूरी की। 1941 में नौकरी की तलाश में कलकत्ता गए जहाँ पहले एक कारख़ाने में काम कया फर व्यावसायिक-औद्यो गक संस्थानों में उच्चपदस्थ कर्मचारी बने। बाद में इलाहाबाद की 'प्रतीक' पत्रिका से संबद्ध हुए और 1948-59 तक आकाशवाणी में कार्यक्रम अ धकारी रहे।

'इसके उपरांत 1960-74 तक साहित्य अकादेमी, दिल्ली के उपस चव के रूप में कार्य कया। 1975 में शमला के उच्चतर अध्ययन संस्थान से वज़िटिंग फ़ेलो के रूप में संबद्ध हुए और यहीं 23 जून 1975 को उनका निधन हो गया।

वह बचपन से ही काव्य-कला में प्रवीण होने लगे थे और साहित्यिक गति व धयों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। उनका पहला काव्य-संग्रह 'छ व के बंधन' 1941 में और दूसरा काव्य-संग्रह 'जागते रहो' 1942 में प्रका शत हुआ। 'ओ अप्रस्तुत मन' (1958), 'अनुपस्थित लोग' (1965), 'एक उठा हुआ हाथ' (1976), 'उतना वह सूरज है' (1977), 'बहुत बाक़ी है' (1978) उनके अन्य काव्य-संग्रह है। हास्य-व्यंग्य, लघुमानव की प्रतिष्ठा, यथार्थ के प्रति आग्रह, क्षणबोध, मध्यमवर्गीय संघर्ष, नियति के प्रति वद्रोह आदि उनकी क वता का मूल स्वर है। क व लीअर के लमेरिक से प्रभा वत होकर उन्होंने तुक्तकों की भी रचना की जिसका संग्रह 'काग़ज़ के फूल' में हुआ है। अरुण कमल ने उन्हें नगरीय जीवन का पहला सजग क व कहा है।

क वताओं के अतिरिक्त उन्होंने गद्य वधा में भी योगदान कया है। 'सेतुबंधन', 'अग्निलीक', 'और खाई बढ़ती गई' उनके प्रमुख नाट्य संग्रह हैं। 'लौटती लहरों की बाँसुरी' उनका उपन्यास है और उनकी कहानियों का संकलन 'आधे-आधे जिस्म' शीर्षक से प्रका शत है। 'प्रसंगवश' में आलोचनात्मक लेख, 'क व की दृष्टि' में निबंध और 'लीक-अलीक' में ल लत-निबंधों का संकलन है। उनकी संपूर्ण रचनाओं का प्रकाशन उनकी धर्मपत्नी बिंदु अग्रवाल के संपादन में 'भारतभूषण अग्रवाल रचनावली' के चार खंडों में कया गया है।

'उतना वह सूरज है' काव्य-संग्रह के लए उन्हें 1978 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित कया गया। उनकी स्मृति में प्रति वर्ष युवा क वता का च र्चत और ववादित 'भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार' प्रदान कया जाता है।

महाप्रभु और स्नान यात्रा

शाश्वती महापात्र
सूचना व जनसंपर्क वभाग
डीवीसी टावर्स

स्नान यात्रा हिन्दुओं का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। 'देवस्नान पू र्णमा' को 'स्नान यात्रा' के नाम से जाना जाता है। यह त्यौहार भगवान जगन्नाथ के भक्तों के लए बहुत धा र्मक महत्त्व रखता है। यह पारंपरिक हिन्दू कैलेंडर के अनुसार ज्येष्ठ महीने की पू र्णमा ति थ में मनाया जाता है। स्कंद पुराण के अनुसार राजा इन्द्रयुग्म ने जगन्नाथ मंदिर में देवताओं की स्थापना के बाद इस स्नान समारोह का आयोजन कया था। इस त्यौहार को भगवान जगन्नाथ के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। यह समारोह पारंपरिक तरीके से पूरी भव्यता के साथ मनाया जाता है और यह भगवान जगन्नाथ मंदिर के सबसे प्रतिष्ठित अनुष्ठानों में से एक है।

यह वर्ष का पहला अवसर है, जब श्री जगन्नाथ, श्री बलभद्र, माता सुभद्रा, सुदर्शन और मदनमोहन को जगन्नाथ मंदिर से लाया जाता है गोटी पहड़ी के माध्यम से। चतुर्धा मुर्तिओं को दईतापतिओं पहड़ी वीजे करके मंदिर के गर्भ गृह से स्नान मंडप तक लाते हैं और मदनमोहन को महाजन सेवक लाते हैं। पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ पूजा करने के बाद अ भमंत्रित जल से औपचारिक रूप से स्नान मंडप पे स्नान कराया जाता है। गराबड स्वर्ण कलश लेकर शीतला देवी के सामने अवस्थित कुंए से 108 घड़ों से जल लाते हैं। उस जल में अश्त्वध, कृष्ण-अगरु, उशीर, गरुचना, देवदार, मुठा, हरिताल, बाहड़ा, आमलकी, सयिष्ठा, ताम्रपर्णी, सोमपर्णी और लोधा मश्रण कया जाता है। उस अ भमंत्रित जल में महाप्रभुओं के आदय स्नान कया जाता है।

औपचारिक स्नान के बाद भगवान जगन्नाथ और बलभद्र को गजानन वेश में सजाने के परंपरा है। भगवान के इस रूप को गजावेश कहा जाता है। हिन्दू मान्यता के अनुसार हर धा र्मक अनुष्ठान की शुरुआत भगवान गणेश की पूजा से होती है और यह समारोह वा र्षक रथ यात्रा की प्रस्तावना है। कंवदंतियों के अनुसार कई शताब्दियों पहले गणपति यह नामक एक वद्वान पूरी के राजा के दरबार में आए थे। राजा ने उन्हें स्नान यात्रा देखने के लए आमंत्रित कया, ले कन वद्वान ने यह कहते हुए मना कर दिया क वह गणेश जी के अलावा कसी अन्य देवता की पूजा नहीं करते हैं।

राजा ने उन्हें जोर दिया और वे शाही संरक्षक को नाराज नहीं करना चाहते थे, इस लए वद्वान् बहुत अनिच्छा से स्नान समारोह देखने गए । उन्हें आश्चर्य हुआ क वे कृष्ण को देखने में असमर्थ थे, कृष्ण के स्थान पर गणेश थे।
यहाँ तक क बलभद्र ने भी गणेश का रूप धारण कर लए थे । उन्होंने महसूस कया क जगन्नाथ जो क वष्णु हैं और बलभद्र जो क शव का एक रूप हैं, उनकी इच्छा पर ध्यान दिया और गणेश का रूप ले लए । उस दिन से, जगन्नाथ के स्नान समारोह के दौरान, पुजारी दोनों भाइयों को हाथी का मुखौटा पहनाते है । यह हाथी वेश या हाथी की पोशाक है, जब कृष्ण और बलराम क्रमशः काले और सफ़ेद हाथी बन जाते हैं, जो गणेश का एक रूप है । इस दिन मुख्य रूप से पा लया पुष्पलक, खुंटिया और दैतापति द्वारा यह बेश आयोजित कया जाता है। राघव दास मठ और गोपाल तीर्थ मठ एक लंबी परंपरा के अनुसार सामग्री की आपूर्ति करते हैं।
अनुष्ठानिक स्नान यात्रा के दौरान देवताओं को बुखार हो जाता है और वे 15 दिनों के लए एकांतवास में चले जाते हैं, और उन्हें राज वैद की देखरेख में स्वस्थ होने के लए एक बीमार कमरे में रखा जाता है । उसे अणसर के रूप में जाना जाता है । मंदिर के कपाट भी उस समय बंद रहते हैं और अंदर ही उनका उपचार होता है । इस समय भक्तों के देखने के लए तीन पट चत्र पेंटिंग प्रद र्शत की जाती है । राज वैद्य द्वारा दी जाने वाली आयुर्वेदिक दवा से देवता एक पखवाड़े में ठीक हो जाते है।
आषाढ़ कृष्ण दशमी ति थ को मंदिर में चका बीजे निति रस्म होती है, जो भगवानों के सेहत में सुधार का प्रतीक है । आषाढ़ शुक्ल प्रतिपद ति थ को भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जाते हैं । उस दिन मंदिर में नेत्र उत्सव होता है और महाप्रभू अपने भक्तों को दर्शन देना शुरू कर देते हैं।
सभी जाति, धर्म और वर्ण के लोग स्नान लीला का दर्शन करते हैं । इस लए इस लीला को पतितपावन लीला कहा जाता है । स्नान यात्रा के अवसर पर लाखों भक्त महाप्रभू के दर्शन के लए पूरी में आते हैं। हिन्दू मान्यता है क उस दिन देवताओं के दर्शन करने से सभी पाप धुल जाते हैं।

निलाचालानिवासाय नित्याय परमात्मने
बल्भद्रसुभ्द्रभ्यां जगन्नाथाय ते नमः

आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस (एजीआई): भविष्य की संभावनाएं और चुनौतियाँ

श्रीमती सरिता

प्रस्तावना

वर्तमान युग में, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से हो रहे विकास ने मानव जीवन को हर पहलू में प्रभावित किया है। इस विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) है। एआई की परिभाषा से आगे बढ़ते हुए, आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस (एजीआई) एक उन्नत रूप है जो मानव-मस्तिष्क जैसी सोच और समझ विकसित करने का प्रयास करता है। यह लेख एजीआई की परिभाषा, इसके संभावित लाभ, चुनौतियाँ और भविष्य की दिशा पर प्रकाश डालता है।

एजीआई की परिभाषा

आर्टि फ शयल जनरल इंटे लजेंस (एजीआई) को समझने के लए, पहले हमें आर्टि फ शयल इंटे लजेंस (एआई) को समझना होगा। एआई वह प्रौद्यो गकी है जिसमें मशीनों को मानव जैसी बुद् धमत्ता और कार्यक्षमता वक सत करने के लए प्र श क्षत कया जाता है। उदाहरणस्वरूप, मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग एआई के उप- वभाग हैं, जो व भन्न कार्यों में उपयोग होते हैं, जैसे छ व पहचान, भाषा अनुवाद, और स्वचा लत वाहन चलाना।

एजीआई का उद्देश्य एक ऐसी मशीन या प्रणाली वक सत करना है जो मानव मस्तिष्क की तरह सोच सके, समस्याओं का समाधान कर सके, निर्णय ले सके, और नई परिस्थितियों में खुद को अनुकू लत कर सके। सरल शब्दों में, एजीआई एक ऐसी कृत्रिम बुद् धमत्ता है जो कसी भी बौद् धक कार्य को उतनी ही क्षमता और दक्षता से कर सके जितना क एक मानव कर सकता है।

एजीआई के संभा वत लाभ

1. स्वास्थ्य देखभाल : एजीआई का उपयोग जटिल च कत्सा मामलों के निदान और उपचार में कया जा सकता है। यह व भन्न रोगों के लक्षणों का वश्लेषण कर सटीक निदान प्रदान कर सकता है और च कत्सा अनुसंधान में तेजी ला सकता है।

2. शक्षा : एजीआई आधारित शक्षा प्रणाली छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों के अनुसार शक्षा प्रदान कर सकती है। इससे शक्षा की गुणवत्ता और पहुंच दोनों में सुधार होगा।

3. वैज्ञानिक अनुसंधान : वैज्ञानिक अनुसंधान में एजीआई की सहायता से नए आ वष्कार और खोजें तेजी से हो सकेंगी। यह जटिल डेटा का वश्लेषण कर नए सद्धांतों और अवधारणाओं को जन्म दे सकता है।

4. आ र्थक वकास : एजीआई आधारित स्वचालन से उत्पादन में वृद् ध होगी और लागत में कमी आएगी।इससे आ र्थक वकास को प्रोत्साहन मलेगा और नई नौकरियों के अवसर उत्पन्न होंगे।

एजीआई की चुनौतियाँ

1. नैतिक और सामाजिक चुनौतियाँ : एजीआई के उपयोग से जुड़ी नैतिक और सामाजिक चंताएँ महत्वपूर्ण हैं। इसके उपयोग से गोपनीयता, सुरक्षा, और मानवीय अ धकारों के उल्लंघन का खतरा है।
2. तकनीकी चुनौतियाँ : एजीआई के वकास में कई तकनीकी बाधाएँ हैं, जैसे जटिल एल्गोरिदम का निर्माण, बड़े डेटा सेट का वश्लेषण, और कंप्यूटिंग पावर की आवश्यकताएं।
3. नियामक चुनौतियाँ : एजीआई के उपयोग को नियंत्रित करने के लए प्रभावी नीतियाँ और नियम बनाना आवश्यक है। इससे यह सुनिश्चित होगा क एजीआई का उपयोग मानवता के लाभ के लए कया जा सके और इसके दुरुपयोग को रोका जा सके।
4. नौकरी की सुरक्षा : एजीआई के व्यापक उपयोग से स्वचालन बढ़ेगा, जिससे कई पारंपरिक नौकरियों का खतरा हो सकता है। इससे बेरोजगारी बढ़ने का खतरा है, जिससे सामाजिक और आ र्थक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

भ वष्य की दिशा

एजीआई का भ वष्य उत्साहजनक और चुनौतीपूर्ण दोनों है। इसकी दिशा को निर्धारित करने के लए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने की आवश्यकता है:
1. नैतिक दिशानिर्देशों का वकास : एजीआई के वकास और उपयोग के लए स्पष्ट नैतिक दिशानिर्देशों का निर्माण करना आवश्यक है। इससे यह सुनिश्चित होगा क एजीआई का उपयोग मानवता के हित में हो और इससे होने वाले नुकसान को कम कया जा सके।
2. शक्षा और जागरूकता : समाज में एजीआई के प्रति जागरूकता बढ़ाना और इसके संभा वत प्रभावों के बारे में शक्षा प्रदान करना आवश्यक है। इससे लोग एजीआई को बेहतर समझ सकेंगे और इसके लाभों का सही तरीके से उपयोग कर सकेंगे।
3. अंतरराष्ट्रीय सहयोग : एजीआई के वकास और नियमन के लए अंतरराष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण है। व भन्न देशों को मलकर एजीआई के लए वैश्विक मानक और नीतियाँ वक सत करनी चाहिए।
4. नवाचार और अनुसंधान : एजीआई के क्षेत्र में नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसके लए सरकारी और निजी क्षेत्रों को मलकर काम करना चाहिए और इसके लए आवश्यक संसाधनों का निवेश करना चाहिए।

निष्कर्ष

आर्टि फ शयल जनरल इंटे लजेंस (एजीआई) एक अत्यंत महत्वपूर्ण और उन्नत प्रौद्यो गकी है, जो भ वष्य में मानव जीवन के हर क्षेत्र में क्रांति ला सकती है। इसके वकास से कई संभा वत लाभ हैं, ले कन इसके साथ ही कई चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें हल करना आवश्यक है। नैतिक दिशानिर्देशों का पालन, शक्षा और जागरूकता, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, और नवाचार और अनुसंधान पर जोर देकर हम एजीआई के क्षेत्र में एक सुर क्षत और लाभप्रद भ वष्य की ओर बढ़ सकते हैं। एजीआई का सही उपयोग हमें एक बेहतर, समृद्ध, और स्थायी भ वष्य की दिशा में अग्रसर कर सकता है।

बड़ी हसीन होगी तू नौकरी

बड़ी हसीन होगी तू ये नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

सुख चैन खोकर चटाई पर सोकर
सारी रात जागकर पन्ने पलटते है
दिन में तहरी और रात को मैगी
आधे पेटखाकर तेरा नाम जपते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

अंजान शहर में छोटा सस्ता कमरा लेके
कचन बेडरूम सब उसमे सहेज के
चाहत में तेरी सबसे दूर रहते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

अपने समान की गठरी सर पर उठाए
अपनी मजबूरियां सबसे छुपाए
खचाखच भरे ट्रेन में सफर करते है
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते है

इंटरनेट अखबारों में तुझको तलाशते है
तेरे लए ना जाने कतनी कताबे पढ़ते है
तेरे चक्कर में बत्तीस साल के जवान
कुवारे फरते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है
बड़ी हसीन होगी तू ये नौकरी जो
सारे युवा आज तुझपे ही मरते....

बड़ी हसीन होगी तू ये नौकरी
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

सुख चैन खोकर चटाई पर सोकर
सारी रात जागकर पन्ने पलटते है
दिन में तहरी और रात को मैगी
आधे पेटखाकर तेरा नाम जपते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

सुमन कुमार
सतर्कता वभाग, चंता वके

अंजान शहर में छोटा सस्ता कमरा लेके
कचन बेडरूम सब उसमे सहेज के
चाहत में तेरी सबसे दूर रहते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

अपने समान की गठरी सर पर उठाए
अपनी मजबूरियां सबसे छुपाए
खचाखच भरे ट्रेन में सफर करते है
सारे युवा आज तुझ पर ही मरते है

इंटरनेट अखबारों में तुझको तलाशते है
तेरे लए ना जाने कतनी कताबे पढ़ते है
तेरे चक्कर में बत्तीस साल के जवान
कुवारे फरते है
सारे युवा आज तुझपे ही मरते है

बड़ी हसीन होगी तू ये नौकरी जो
सारे युवा आज तुझपे ही मरते....

दामोदर घाटी निगम मुख्यालय में केंद्रीय वद्युत तथा आवास एवं शहरी मामलों के मंत्री माननीय श्री मनोहर लाल महोदय का स्वागत करते हुए निगम अध्यक्ष, श्री एस सुरेश कुमार, भा.प्र.से.

दामोदर घाटी निगम, मुख्यालय में 26.07.2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन स मिति (कार्यालय-4) की पांचवी छमाही बैठक आयोजित की गयी।

23.07.2024 को दामोदर घाटी निगम में पछड़ा वर्ग हेतु आरक्षण नीति पर समीक्षा के दौरान माननीय अध्यक्ष श्री हंसराज गंगाराम अहीर, राष्ट्रीय पछड़ा वर्ग आयोग (ओबीसी), भारत सरकार का स्वागत करते हुए डॉ जॉन मथाई, सदस्य स चव, डीवीसी।

दामोदर घाटी निगम, आरटीपीएस में सीएसआर कार्यक्रम के तहत रघुनाथपुर के नीलडीह हाई स्कूल और संकरा हाई स्कूल में वाटर प्यूरीफायर कम कूलर लगाया गया।

डीवीसी गति व धयाँ

राजभाषा ई-पत्रिका

दामोदर घाटी निगम, तुबेद कोयला खदान के सौजन्य से मलेरिया और डेंगू जागरूकता श वर का आयोजन कया गया।

दामोदर घाटी निगम के अ धकार क्षेत्र, केटीपीएस में 14 वर्ष से कम आयु की लड़ कयों के लए एक ट्रायल फुटबॉल मैच का आयोजन कया गया।

दामोदर घाटी निगम, कोडरमा ताप वद्युत केंद्र में महिला एथ लट मट का आयोजन कया गया।

दामोदर घाटी निगम, मैथन डैम परियोजना में महिला क्लब द्वारा सावन उत्सव मनाया गया।

दामोदर घाटी निगम, कोलकाता में महिला क्लब द्वारा तीज उत्सव मनाया गया।

जुलाई,2024 में सेवानिवृत्त अ धकारीयों / कर्मचारियों की सूची

क्रम सं.	नाम	पदनाम	वभाग	केंद्र
1	श्री दिलीप चटर्जी	कार्यकारी (वद्युत)	ट्रांस मशन	ट्रांस मशन (हावड़ा)
2	श्री राजेश रंजन सन्हा	प्रबंधक (सुरक्षा)	सुरक्षा	बीटीपीएस
3	श्री देबाशीष माजी	सहायक प्रबंधक (वद्युत)	ट्रांस मशन	ट्रांस मशन (दुर्गापुर)
4	श्री बासुदेब घोष	प्रबंधक (असैनिक)	स वल	डीएसटीपीएस
5	श्री राजीब भट्टाचार्य	कार्यालय अधीक्षक (पीजी)	ईंधन	कोलकाता
6	श्री सुभाष रबी चटर्जी	सहायक नियंत्रक (यांत्रिकी) पीजी	ओएंडएम	डीएसटीपीएस
7	श्रीमती अंज ल लाहिरी	कार्यालय अधीक्षक (पीजी-1)	वत और लेखा	मैथन
8	श्री शेख उमर अली	डुप्लीकेट मशीन ऑपरेटर	क्यूसी एंडआई	मैथन
9	श्री अंजन घोष	सहायक नियंत्रक (वद्युत) पीजी	प्रणाली	ट्रांस मशन (दुर्गापुर)
10	श्री अवध कशोर पांडेय	सहायक ग्रेड-2	प्रणाली	सीटीसी (मैथन)
11	श्री संतोष कुमार	प्रभारी चार्जहैंड [संचार](पीजी)	ओएंडएम	संचार (मैथन)
12	श्री ननी गोपाल मंडल	सहायक नियंत्रक (यां) पीजी-2	मानव संसाधन	एमटीपीएस
13	श्री जगदीश चंद्र सरदार	कार्यालय अधीक्षक (पीजी-1)	ओएंडएम	कोलकाता
14	श्री मधुसूदन दे	सहायक संपर्क [यांत्रिकी](पीजी)	मानव संसाधन	एमटीपीएस
15	श्री राजा मुखर्जी	कार्यालय अधीक्षक (पीजी-1)	ओएंडएम	कोलकाता
16	श्री हेमलाल मुर्मू	चार्जहैंड (लाइन्स)(पीजी)	सीएमएम	सीटीपीएस
17	मोहम्मद इस्माइल	सहायक ग्रेड III	स वल	बीटीपीएस
18	श्री बंशी धर नंदी	मजदूर	मानव संसाधन	डीटीपीएस
19	श्रीमती जगनी मं झयान	महिला मजदूर (पीजी-II)	प्रणाली	सीटीपीएस
20	श्री निताई घोष	कुशल खलासी	ट्रांस मशन	ट्रांस मशन (दुर्गापुर)